वर्ष 2025 माह मार्च अंक 01

ToB

बालमन

उत्तर प्रदेश

संपादकीय

प्यारे बच्चों,

प्रकृति अपनी सुंदरता के साथ सदा अपना चक्र दोहराती है।बसंत के साथ धीरे धीरे हम मार्च के महीने में प्रवेश कर गए हैं। रमजान का पाक महीना और होली इसी महीने हैं।आप सभी को सद्भावना और प्रेम के पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं।आप सभी जिस तरह से बालमन से जुड़ कर अपनी प्रतिभा और कला को हम तक पहुंचाते हैं, ऐसे ही जारी रखे। राज्य स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर पर आपकी प्रतिभा सभी को पसंद आ रही है।

बच्चो ! हमे आपको बताते हुए बहुत ही हर्ष हो रहा हैं कि ToB बालमन सभी के बीच काफी लोकप्रिय है।हम शुरू से बेहतर से बेहतरीन की ओर अग्रसर है। इस महीने की पत्रिका को आपको समर्पित करते हुए हमे बहुत खुशी हो रही है। आज का जमाना सोशल मीडिया का है। यदि आपके पास कला है तो उसे अपने शिक्षको से जरूर साझा करे और बालमन उत्तर प्रदेश की टीम के माध्यम से उसे जरूर हम तक पहुंचाए। हमारी TOB बाल मन पत्रिका की टीम बेहतर से बेहतर करने के लिए सदा प्रयत्नशील है। अनजाने में कोई भूल या त्रुटि हुई हो तो उसके लिए हम क्षमाप्रार्थी है। हम आपके उज्जवल भविष्य की कामना करते है।

शुभकामनाओं सहित

आपका

शरद कुमार वर्मा

प्रधान संपादक

TEACHERS OF BIHAR

अनमोल विचार

किसी भी देश की स्थिति, वहाँ रहने वाली महिलाओं की स्थिति से मालूम पड़ती है।

सरोजिनी नायडू
(स्वतंत्र भारत की पहली महिला राज्यपाल)

जन्म: 13 फरवरी 1879
मृत्यु: 02 मार्च 1949

विश्व विजय सिंह

ToB बालमन

प्रेरक प्रसंग

संगठन में शक्ति

एक बार हाथ की पाँचों उंगलियों में आपस में झगड़ा हो गया। वे पाँचों खुद को एक दूसरे से बड़ा सिद्ध करने की कोशिश में लगे थे। अंगूठा बोला कि मैं सबसे बड़ा हूँ, उसके पास वाली उंगली बोली मैं सबसे बड़ी हूँ। इसी तरह सारे खुद को बड़ा सिद्ध करने में लगे थे, जब निर्णय नहीं हो पाया तो वे सब अदालत में गये।

न्यायाधीश ने सारा माजरा सुना और उन पाँचों से बोला कि आप लोग सिद्ध करो की कैसे तुम सबसे बड़े हो? अंगूठा बोला मैं सबसे ज़्यादा पढ़ा लिखा हूँ क्योंकि लोग मुझे हस्ताक्षर के स्थान पर प्रयोग करते हैं। पास वाली उंगली बोली कि लोग मुझे किसी इंसान की पहचान के तौर पर इस्तेमाल करते हैं। उसके पास वाली उंगली ने कहा कि आप लोगों ने मुझे नापा नहीं अन्यथा मैं ही सबसे बड़ी हूँ। उसके पास वाली उंगली बोली मैं सबसे ज़्यादा अमीर हूँ क्योंकि लोग हीरे और जवाहरात और अंगूठी मुझी में पहनते हैं। इसी तरह सभी ने अपनी अलग अलग प्रशंशा की।

न्यायाधीश ने अब एक रसगुल्ला मँगाया और अंगूठे से कहा कि इसे उठाओ, अंगूठे ने भरपूर ज़ोर लगाया लेकिन रसगुल्ले को नहीं उठा सका। इसके बाद सारी उंगलियों ने एक-एक करके कोशिश की लेकिन सभी विफल रहे।

।अंत में न्यायाधीश ने सबको मिलकर रसगुल्ला उठाने का आदेश दिया तो झट से सबने मिलकर रसगुल्ला उठा दिया - फ़ैसला हो चुका था, न्यायाधीश ने फ़ैसला सुनाया कि तुम सभी एक दूसरे के बिना अधूरे हो और अकेले रहकर तुम्हारी शक्ति का कोई अस्तित्व नहीं है, जबकि संगठित रहकर तुम कठिन से कठिन काम आसानी से कर सकते हो।

TEACHERS OF BIHAR
THE CHANGE MAKERS

पद्य पंकज

वे मुस्काते फूल,
नहीं जिनको आता है मुरझाना,
वे तारों के दीप, नहीं जिनको
भाता है बुझ जाना!

महादेवी वर्मा

(26 मार्च 1907-11 सितम्बर 1987)

बालमन

टीचर्स ऑफ बिहार बालमन की कलम से...

प्रकृति ने सभी को कुछ ख़ास बनाया हैं।जिस तरह अच्छे से सिंचित छोटा पौधा बड़ा होकर एक सुन्दर वृक्ष बनता हैं ठीक इसी तरह हमारे बच्चों को बचपन से ही उनके कला और प्रतिभा को एक मंच देते हुए अवसर दे तो बड़े होकर अपने प्रतिभा से एक अच्छे इंसान और कलाकार बन सकते हैं।हमने भी इसी सोच के साथ बच्चों के लिए बालमन पत्रिका की परिकल्पना करते हुए पत्रिका के साथ प्रतियोगिता आयोजित कर बच्चों को प्रोत्साहित और सम्मानित किया हैं।

बालमन क्यों ?

सरकारी विद्यालय में पढ़ने वाले अधिकांश बच्चें प्राय: ऐसे घर से आते हैं जिनके पास संसाधनों की बहुत कमी है परंतु वे बच्चें प्रतिभा के बहुत धनी हैं। विद्यालय स्तर तक ही बच्चों की प्रतिभा सीमित न रहे, जिला,राज्य और राष्ट्रीय स्तर तक बच्चों की प्रतिभा से उन्हें एक पहचान मिले साथ ही साथ उनकी कला हमेशा के लिए संरक्षित रहे। इसी उद्देश्य के साथ बालमन की टीम कार्य कर रही हैं।हम सभी को देश के भविष्य कहे जाने वाले बच्चों को किताबी ज्ञान के साथ बच्चों को कला से जोड़ना होगा।उनकी प्रतिभा चाहे जो भी हो उसे स्थानीय स्तर से राष्ट्रीय स्तर पर लाने की जिम्मेदारी हम सभी जागरूक शिक्षकों की है। हम सभी के इस प्रयास से हो सकता है कि इन बच्चों की अपनी एक नई पहचान तो बनेगी ही अपने प्रतिभा से ये बच्चें रोजगार के नए अवसर भी उत्पन्न करेंगे। हमारे इसी प्रयास के लिए टीचर्स ऑफ बिहार बालमन जरूरी है।

www.teachersofbihar.org/publication/balman

ToB बालमन

मन की बात

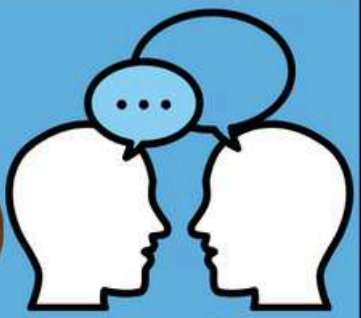

जब मेरे मामा जी ने अपने मोबाइल फोन पर 'ToB बालमन' पत्रिका डाउनलोड करके मुझे पढ़ने के लिए दी तो मेरे लिए यह एक आश्चर्य ही था क्योंकि मुझे पहली बार पता चला था कि अपने स्कूल की पाठयपुस्तकों से बाहर भी एक पढ़ने की दिलचस्य दुनिया है जो हमें कल्पना के संसार में ले जाती है। बालमन मैगजीन में अलग- अलग विद्यालयों में पढ़ने वाले भाई- बहनों की सुंदर ड्राइंग और उनकी कविताओं ने मेरा मन मोह लिया। साथ ही आदरणीय सर और मैडम की लिखी रचनाएं मुझे प्रेरणाप्रद लगीं। सबका हृदय से अभिनंदन।

आकांक्षा मौर्या ,कक्षा 9
रेलवे हायर सेकेंडरी स्कूल
चारबाग, लखनऊ (U.P.)

होली हैं !

मम्मी तुम नाराज न होना
स्कूल में खेल ली होली
कमीज़ पर जरा रंग पड़ गया
थोड़ी सी पैंट भिगो ली

झूमते हैं, गाते हैं
होली के दिन,
आओ खुशिया मनाते हैं!

सौजन्य से:
गुंजन सक्सेना, शिक्षिका
बरेली (उत्तर प्रदेश)

बालमन होली विशेषांक

विद्यालय में होली खेलना अच्छा लगता हैं ..

मेरा ऐसा सोचना है कि यदि कोई भी त्यौहार विद्यालय में मनाया जाए तो उसका आनंद चौगुना हो जाता है। क्योंकि हमें यहां अपने स्कूली मित्रों के साथ पर्व मनाने का अवसर मिलता है। इसलिए परीक्षा के अंतिम दिन हमने आपस में रंग खेलने की योजना बना ली। कुछ रंग, कुछ गुलाल...और हो गए सबके रंगबिरंगे गाल। सबके चेहरे पर थी अजीब सी खुशी की झलक, जो हमें होली आने के पहले ही मिल गई थी।

- महक तिवारी ,कक्षा 10
रेलवे हायर सेकेंड्री स्कूल
चारबाग, लखनऊ (U.P.)

TOB बालमन

डॉट्स मिलाओ चित्र बनाओ

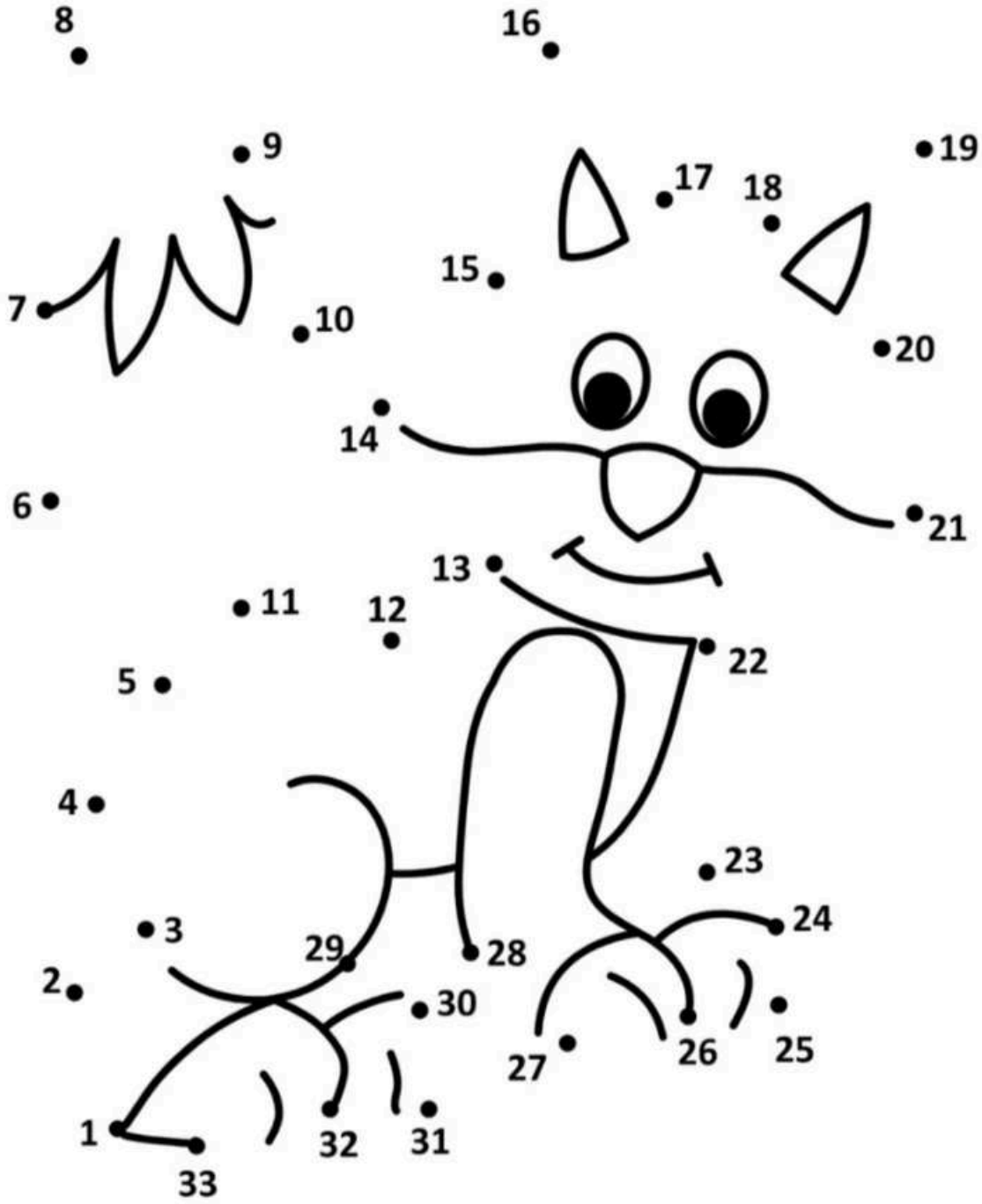

आप कौन से बनी आकृति पाते हैं? .....

हेल्पलाइन नंबर :
1930

ToB बालमन

Cyber दूत

★★★★★

साइबर शिक्षा से होगी साइबर सुरक्षा

इंटरनेट का उपयोग करते समय हमेशा साइबर सुरक्षा प्रथाओं और सुरक्षा नैतिकता का पालन करें।

धीरज कुमार

TOB बालमन

Quiz

1

बिहार का राजकीय पशु क्या हैं ?

A. बैल

B. गाय

C. घोड़ा

D. शेर

सही उत्तर: A

2

मंदार पर्वत किस राज्य में हैं?

A. हिमाचल प्रदेश

B. उड़ीसा

C. झारखण्ड

D. बिहार

सही उत्तर: D

3

कंगारू किस देश का राष्ट्रीय पशु हैं ?

A. चीन

B. आस्ट्रेलिया

C. दक्षिण कोरिया

D. स्पेन

सही उत्तर: B

4

उत्तर प्रदेश का उच्च न्यायालय कहां स्थित हैं?

A. वाराणसी

B. लखनऊ

C. प्रयागराज

D. मेरठ

सही उत्तर: C

धीरज कुमार

ToB बालमन

बूझो तो जाने ....

1

चेहरे पर लगाते है प्यार से,लोग छुड़ाते है आराम से
सूखा और गीला दोनों है,क्या है बूझो तो जाने

सही उत्तर: रंग

2

सबसे गले मिल कर खुशियां मनाना है।
प्यार से एक दूसरे के घर जाना है।।
ये खुशियों और उत्साह का पर्व है।
आपस में प्यार से हमे मानना है।।

सही उत्तर: होली/ईद

3

इससे होती रंगों की बौछार
होली में है बच्चो का ये हथियार।
नाम बताओ जल्दी से
मिलेगा तुमको ढेर सारा प्यार

सही उत्तर: पिचकारी

4

आने का कोई समय नहीं,करते है हम इनका मान।
मिलता है उपहार मिलता है सम्मान
बूझो तो जानें....?

सही उत्तर: मेहमान

संजय कुमार

लुम्बिनी(नेपाल)

ToB बालमन

विश्व के धरोहर

लुम्बिनी नेपाल में स्थित एक महत्वपूर्ण बौद्ध तीर्थस्थल है। यहां भगवान बुद्ध का जन्म हुआ था और यह यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल के रूप में भी घोषित है।लुम्बिनी नेपाल के रूपन्देही जिले में स्थित है जो कपिलवस्तु के पूर्व में और शाक्य के दक्षिण-पश्चिम देवदाह में है।युनेस्को तथा विश्व के सभी बौद्ध सम्प्रदाय (महायान, बज्रयान, थेरवाद आदि) के अनुसार यह स्थान गौतम बुद्ध की जन्मस्थली है।

लुम्बिनी में अशोक स्तंभ भी है, जो सम्राट अशोक की लुम्बिनी यात्रा का प्रतीक है।लुम्बिनी में मायादेवी मंदिर भी है जो बुद्ध की माता मायादेवी को समर्पित है। यहां पुष्करिणी नामक एक पवित्र तालाब भी है जहाँ बुद्ध की माता ने स्नान किया था।लुम्बिनी को 1997 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल के रूप में घोषित किया गया था। लुम्बिनी भारत की सीमा के बहुत करीब स्थित है। काठमांडू से कुछ किलोमीटर दूर निकटतम हवाई अड्डा भैरहवा में है, जहाँ सड़क मार्ग से पहुँचा जा सकता है।

धीरज कुमार

धीरज कुमार

ToB बालमन कहानी

नन्हीं गरिमा की होली

होली का त्यौहार आने वाला था। प्राथमिक विद्यालय के वर्ग 1 में पढ़ने वाली नन्ही गरिमा के घर में भी होली की खूब तैयारियां चल रहीं थीं। गरिमा की मां और दीदी मिलकर मीठी- मीठी गुझिया बना रहे थे । वहीं नन्हीं गरिमा भी पास बैठी थी। वह भी एक- आध गुझिया में खोया भरकर खुशी से फूली नहीं समा रही थी। गुझिया बनाते- बनाते अचानक मां ने नन्ही गरिमा से सवाल किया कि अच्छा बताओ बिटिया, तुम इस बार होली के दिन सबसे पहले किसे रंग लगाओगी?

नन्ही गरिमा के लिए मां का यह सवाल सरल नहीं था। उनका यह सोचना था कि गरिमा जिसे अधिक पसंद करती होगी, उसी के साथ सबसे पहले होली खेलेगी । देखते हैं कि परिवार की यह नन्ही बिटिया सबसे अधिक चाहती है, दादी मां , पापा , मम्मी या दीदी को ? मां के किए गए इस सवाल पर कुछ सोचकर नन्ही गरिमा बोली, "मम्मी जी, यह तो आपको होली वाले दिन ही पता चलेगा कि मैं अपना पहला रंग किसे लगाऊंगी।" नन्ही गरिमा के इस जवाब ने गहरा सस्पेंस पैदा कर दिया था। अब सबको होली वाले दिन का इंतजार था।

होली का दिन आ गया था। गरिमा उठी और अपनी किताबों वाली आलमारी से लाल रंग के गुलाल की डिबिया निकाल लाई। परिवार के सभी सदस्यों की नजर नन्ही गरिमा पर थी कि देखें आज वह सबसे पहले किसे रंग लगाती है? बेटी गरिमा गुलाल लेकर दौड़ते हुए घर के बगीचे में जा पहुंची और उसने अपने हाथों से लगाये हुए तुलसी के पौधे पर गुलाल लगा दिया और हाथ जोड़कर प्रणाम किया। उसके इस कार्य को देखकर सभी लोग भावुक हो गए थे। नन्ही गरिमा का प्रकृति प्रेम सबके मन को भा गया था।

शरद कुमार वर्मा (शिक्षक)
रेलवे हायर सेकेंड्री स्कूल
चारबाग, लखनऊ (U.P.)

ToB बालमन

दर्शनीय स्थल

चंद्रप्रभा वन्यजीव अभ्यारण्य (U.P.)

चंद्रप्रभा वन्यजीव अभयारण्य की स्थापना मई 1957 में जैव विविधता के विकास और संरक्षण के लिए की गई थी। यह छोटी पहाड़ियों, प्रागैतिहासिक गुफाओं, सुहाने झरनों और घने जंगल से घिरा हुआ क्षेत्र है। अभयारण्य का नाम चंद्रप्रभा नदी के नाम पर रखा गया है, जिसका अर्थ है 'चाँद की चमक'। चंद्रप्रभा नदी कर्मनाशा नदी की एक सहायक नदी है, और दोनों जंगल से होकर गंगा में मिलती हैं। अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण, दोनों नदियों ने हजारों वर्षों से रास्ते में कई तरह की वनस्पतियों और जीवों का पोषण किया है। काशी राज दिवोदास धन्वंतरि के समय से ही दुर्लभ और समृद्ध वनस्पतियाँ आयुर्वेदिक चिकित्सा का एक प्रमुख स्रोत रही हैं। कैमूर पर्वतमाला की उत्तरी ढलानों पर नौगढ़ किले और विजयगढ़ किले के पास स्थित पहाड़ियों और घने जंगल में 78 वर्ग किलोमीटर में फैली सैकड़ों गुफाएँ छिपी हुई हैं। वर्तमान में परित्यक्त ये गुफाएँ आदिम काल में शुरुआती मनुष्यों का घर थीं। इन गुफाओं की दीवारों पर आदिम गुफा चित्रों के रूप में उनके जीवन और निवास के साक्ष्य आज भी मिल सकते हैं। अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में वाराणसी के शासकों के लिए शिकारगाह के रूप में इस जंगल को विकसित किया गया था। यहाँ कई तरह के जंगली जानवर पाए जाते हैं, जिनमें काले हिरण, चीतल हिरण, सांभर हिरण, नीलगाय, जंगली सूअर, भालू, तेंदुआ, साही, चिंकारा, घड़ियाल और अजगर शामिल हैं। पक्षी प्रेमियों के लिए स्वर्ग, इस अभयारण्य में पक्षियों की लगभग 150 प्रजातियाँ पाई जाती हैं। यहां आने वाले पर्यटकों और आगंतुकों के लिए उत्तर प्रदेश सरकार के वन और पर्यटन विभाग ने निजी सहयोगियों की मदद से बहुत ही आरामदायक आवासीय सुविधाएं विकसित की हैं। आगंतुक यहां कई तरह की मजेदार गतिविधियों का आनंद ले सकते हैं जैसे कि लंबी पैदल यात्रा, साइट-सीइंग, आदिवासी संगीत, स्वादिष्ट भोजन और बहुत कुछ।

कुमार राकेश मणि (प्रधानाध्यापक)
U.H.S. कोटा, नुआंव(कैमूर) बिहार

ToB बालमन

हँसी के हसगुल्ले

आवश्यक सूचना

Holi में इतने भी फटे पुराने कपड़े मत पहन लेना कि जिससे कोई तुम्हें रोटी हाथ में थमाकर चला जायें।।

इंग्लिश टीचर(क्लास में): गांधीजी इस फादर ऑफ दि नेशन।

तभी यह सुनते हुए प्रिंसिपल क्लास में आ कर बच्चों से हिंदी में पूछते हैं।

प्रिंसिपल: गांधीजी के पिता का क्या नाम है?

एक लड़का खड़ा होकर बोला: दिनेशन

प्रिंसिपल गुस्सा में: ये क्या बोल रहे हो?

लड़का: अभी तो सर बताए कि" गांधीजी इस फादर ऑफ दिनेशन"

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, तथा पता के साथ लिख कर संपर्क सूत्र 9431680675 पर भेजे ।उसे आपके नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा।

अरविंद कुमार

ToB बालमन

Addition Crossword

3	+		=	6
+				+
8				2
=				=
		2		
		+		
7				9
+		=		+
	+	4	=	5
=				=

	+	5	=	
+				+
2	+	5	=	7
=		+		=
	+	2	=	10
				=
	+		=	

ToB बालमन

मास विशेषांक

चैत्र मास

भारतीय पंचांग का पहला महीना चैत्र है। चित्रा नक्षत्र से संबंध होने के कारण इसका नाम चैत्र पड़ा है। चैत्र माह से ही वसंत का समापन और ग्रीष्म का आरम्भ होता है तथा साथ ही शुभता और ऊर्जा का भी आरंभ होता है।

चैत्र मास में ऋतु का परिवर्तन होता है, जो शरीर पर विशेष प्रभाव डालता है। आयुर्वेद के अनुसार, यह अवधि शरीर को शुद्ध करने और स्वास्थ्य को सुदृढ़ करने के लिए अनुकूल मानी जाती है। इस समय हल्का और सात्त्विक आहार लेने की सलाह दी जाती है।

चैत्र माह का विशेष महत्व इस कारण से भी है क्योंकि इसी महीने के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से हिन्दू नववर्ष विक्रमी संवत 2082 की शुरुआत होती है। शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि को हिन्दू नववर्ष के अलावा ईरान में इस तिथि को 'नौरोज' यानी 'नया वर्ष' मनाया जाता है। आंध्र में यह पर्व 'उगादिनाम' से मनाया जाता है। उगादिका अर्थ होता है युग का प्रारंभ, अथवा ब्रह्मा की सृष्टि रचना का पहला दिन।

इस प्रतिपदा तिथि को ही जम्मू-कश्मीर में 'नवरेह', पंजाब में वैशाखी, महाराष्ट्र में 'गुडीपड़वा', सिंध में चेतीचंड, केरल में 'विशु', असम में 'रोंगली बिहू' आदि के रूप में मनाया जाता है।

हिन्दूधर्म में यह समय अत्यंत पवित्र माना जाता है और इसी महीने चैत्र नवरात्रि का आयोजन होता है। इस वर्ष चैत्र नवरात्रि 30 मार्च 2025 से प्रारंभ होकर 7 अप्रैल 2025 तक चलेगी। इन नौ दिनों में मां दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा की जाती है, व्रत रखे जाते हैं, और घर-घर में भक्तिमय वातावरण का निर्माण होता है।

राकेश कुमार मणि (प्रधानाध्यापक)
U.H.S. कोटा, नुआंव , कैमूर

आपकी कविता

बालमन पत्रिका

पत्रिका है बच्चों का एक आधार,
जिसमें समाया है संसार ।
पहले पन्ने पर मन की बात ,
अंदर है बहुत काम की बात।
खेल-खेल में सीखो है ,
बूझो पहेली इसमें है ।
गणित की दुनिया में सर चकराए
हंसगुल्ले भी गुदगुदायें।
बच्चों की करामाते हैं,
देश दुनिया की बातें हैं ।
खेल भी है खिलौने भी ,
सुंदर सपन सलोने भी ।
उत्सव है त्यौहार है,
ज्ञान विज्ञान की भरमार है।
चांद के साथ सितारे हैं,
विद्यालय के सुंदर नजारे हैं।
हम हैं और आप हैं,
विद्वान जनों का साथ है।

वर्ष 2025 माह मार्च अंक 39
बालमन
Powered by Teachers of Bihar

खुश्बू कुमारी (शिक्षिका)
UMS दुघरा, भभुआ, कैमूर
बिहार

ToB बालमन

Holi special

प्रा ०वि ० प्रखंड कॉलोनी फूलवारीशरीफ, पटना

Govt UMS SENUARIYA ,CHANPATIA (WEST CHAMPARAN)

UMS सिलौटा, भभुआ कैमूर

मध्य विद्यालय सहसपुर, बारून औरंगाबाद

Premlata class 5
P.s.Bairgachhi kumaripur manihari (katihar)Bihar

PS block headquarter kasba Purnea

मध्य विद्यालय मलहरिया, समेली, कटिहार

UMS अर्रा, मोहनियां कैमूर

सौजन्य से: गुंजन सक्सेना, बरेली (U.P.)

ToB बालमन

अंतरिक्ष की दुनिया

शनि ग्रह

यह सूर्य से छठा ग्रह है और बृहस्पति के बाद सौरमंडल का दूसरा सबसे बड़ा ग्रह है।शनि ग्रह अपने छल्लों के लिए जाना जाता है।शनि ग्रह का वायुमंडल 94% हाइड्रोजन और 6% हीलियम से बना है।शनि का एक ठोस कोर है जो लोहे, निकल और चट्टान से बना है। शनि के 145 से ज़्यादा चंद्रमा हैं, जिनमें से सबसे बड़े टाइटन और रिया हैं।टाइटन की खोज डच वैज्ञानिक ने साल 1655 में दूरबीन से की थी।शनि के छल्ले ज़्यादातर पानी की बर्फ़ के अलग-अलग कणों से बने हैं।शनि के छल्लों को गैलीलियो ने साल 1610 में देखा था।शनि का चुंबकीय क्षेत्र पृथ्वी की तुलना में थोड़ा कमज़ोर है।सूर्य के चारों ओर एक घुमाव पूर्ण करने के लिए इसको 10,759 पृथ्वी दिवस लगभग 29½ वर्ष) लगता हैं।

धीरज कुमार

ToB बालमन

अजब गजब

लठमार होली

लठमार होली, जो बरसाना (मथुरा, उत्तर प्रदेश) में खेली जाती है, एक खास तरह की होली है, जिसमें नंदगांव के पुरुष और बरसाने की महिलाएं भाग लेते हैं, और महिलाएं पुरुषों पर लाठियाँ बरसाती हैं।

मसान होली

भस्म होली, जिसे मसान होली के नाम से भी जाना जाता है, वाराणसी में मनाई जाने वाली एक अनूठी परंपरा है, जहां रंगों के बजाय अंतिम संस्कार की चिता से पवित्र राख का उपयोग करते हैं ।

अंगारों वाली होली

इस प्रकार की होली राजस्थान, मध्यप्रदेश और कर्नाटक के कई इलाकों में खेली जाती है। अंगारों की होली को अग्नि होली के नाम से भी जाना जाता है। यह वीरता और आस्था से जुड़ी एक अनोखी परंपरा है।

फूलों वाली होली

फूलों वाली होली, जिसे फुलेरा दूज भी कहा जाता है, मुख्य रूप से वृंदावन और बरसाना में मनाई जाती है, जहाँ भक्त एक-दूसरे पर रंग-बिरंगे फूलों की पंखुड़ियाँ बरसाते

प्रहलाद और होलिका

होली का त्यौहार प्रह्लाद और होलिका की कथा से भी जुडा हुआ है। विष्णु पुराण की एक कथा के अनुसार प्रह्लाद के पिता दैत्यराज हिरण्यकश्यप ने तपस्या कर देवताओं से यह वरदान प्राप्त कर लिया कि वह न तो पृथ्वी पर मरेगा न आकाश में, न दिन में मरेगा न रात में, न घर में मरेगा न बाहर, न अस्त्र से मरेगा न शस्त्र से, न मानव से मारेगा न पशु से। इस वरदान को प्राप्त करने के बाद वह स्वयं को अमर समझ कर नास्तिक और निरंकुश हो गया। वह चाहता था कि उनका पुत्र भगवान नारायण की आराधना छोड़ दे, परन्तु प्रह्लाद इस बात के लिये तैयार नहीं था। हिरण्यकश्यप ने उसे बहुत सी प्राणांतक यातनाएँ दीं लेकिन वह हर बार बच निकला। हिरण्यकश्यप की बहन होलिका को यह वरदान प्राप्त था कि वह आग में नहीं जलेगी। अतः उसने होलिका को आदेश दिया के वह प्रह्लाद को लेकर आग में प्रवेश कर जाए जिससे प्रह्लाद जलकर मर जाए। परन्तु होलिका का यह वरदान उस समय समाप्त हो गया जब उसने भगवान भक्त प्रह्लाद का वध करने का प्रयत्न किया। होलिका अग्नि में जल गई परन्तु नारायण की कृपा से प्रह्लाद का बाल भी बाँका नहीं हुआ। इस घटना की याद में लोग होलिका जलाते हैं और उसके अंत की खुशी में होली का पर्व मनाते हैं।

आप और हम

होली और ईद

होली और ईद दोनों ही त्योहार, भले ही अलग-अलग धर्मों से जुड़े हों, लेकिन दोनों में कुछ समानताएं हैं, जैसे कि दोनों खुशियों और मिलनसारिता का प्रतीक हैं। दोनों बुराई पर अच्छाई की जीत का संदेश देते हैं। दोनों त्योहार खुशियों, मिलनसारिता और भाईचारे को बढ़ावा देते हैं।

- दोनों त्योहार सामुदायिक उत्सव हैं, जहाँ लोग एक साथ आते हैं और खुशियाँ मनाते हैं।
- होली रंग और उत्सव का त्योहार है, जबकि ईद में भी रंगीन कपड़े और मिठाइयाँ शामिल होती हैं।
- होली और ईद के दिन सारे लोग अपने पुराने गिले-शिकवे भूलकर एक-दूसरे को गुलाल लगाकर और गले लगकर आपसी भाईचारे व सौहार्द का संदेश देते हैं। युग-युगीन से मान्यता है, कि होली औऱ ईद के दिन लोग पुरानी कटुता भूलकर गले मिलते हैं ओर फिर से दोस्त बन जाते हैं।

कुमार राकेश मणि (प्रधानाध्यापक)
U.H.S. कोटा ,नुआंव (कैमूर)
बिहार

Thank You

अगर आपको पत्रिका अच्छी लगी हो तो कृपया इसे अधिक से अधिक शेयर करे।

यदि आपके कोई सुझाव हो तो +91 9838214110 पर संपर्क कर सकते है।

www.teachersofbihar.org